Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ': एक अभियान

Veerpal*

M.A. (Hindi) NET, Village Bupp, Post office Buppa, Tehsil & District, Sirsa

सार – ***बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना (BBBP) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय और परिवार कल्याण मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास की एक संयुक्त पहल के रूप में समन्वित और अभिसरित प्रयासों के अंतर्गत बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना की शुरुआत 22 जनवरी, 2015 को की गई है और जिसे निम्न लिंगानुपात वाले 100 जिलों में प्रारंभ किया गया है। सभी राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को कवर 2011 की जनगणना के अनुसार निम्न बाल लिंगानुपात के आधार पर प्रत्येक राज्य में कम से कम एक ज़िले के साथ 100 जिलों का एक पायलट जिले के रूप में चयन किया गया है।***

----------X----------

शास्त्रों में लिखा है- 'यत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता' इस पंक्ति का आशय यह है कि जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता भी रमण करते हैं। वस्तुतः नारियों का सम्मान अनंतकाल से होता चला आ रहा है। समाज में नारी की अस्मिता को नकारा नहीं जा सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब नारी की अस्मिता पर आँच आई तब-तब देश की जनता ने हुंकार भरी। किसी कवि ने बेटी की अस्मिता को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया है-

बेटा से बेटी भली, जो कुलवंती होय।

बेटा तारे एक कुल, बेटी तारे दोय।।

अर्थात् बेटी, बेटा से बढकर है। वह कुलवंती कहलाती है। बेटा एक कुल का उद्धार करता है जबकि बेटी दो कुलों का उद्धार करती है। माता-पिता की छत्र छाया में रहकर बेटी अपने सुकर्मों से मायके का उद्धार करती है। ससुराल पक्ष में रहकर वह संतान उत्पन्न करके कुल को आगे बढ़ाती है।

देश के प्रधानमंत्री श्रीयुत् नरेन्द्र मोदी ने उक्त आशय से अनुप्राणित होकर बेटियों को बचाने के लिए पूरे देश में एक मुहिम छेड़ी हुई है जिसका नाम है 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'। इस अभियान के निश्चित ही सार्थक परिणाम सामने आएंगे। मोदी ने देश के लोगों को लिंगानुपात में सुधार करने के लिए एक नया संदेश दिया है। प्रधानमंत्री जी ने इस सामाजिक समस्या पर चिंता जाहिर की है, जो सिर्फ हरियाणा ही नहीं, पूरे देश की है। उन्होंने आह्वान किया है कि हमें बच्चियों की रक्षा करते हुए उनकी पढ़ाई की चिंता करनी होगी। कुपोषण दूर करना होगा। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

देश में लिंगानुपात बिगाड़ने में सबसे बड़ी भूमिका सास की है, जो एक बेटी पैदा होते ही न केवल बहू को ताने देना शुरू कर देती है, बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों को भी बेटियों को लेकर उकसाना शुरू कर देती है। यह प्रसन्नता की बात है कि प्रदेश सरकार ने जमीनी स्तर पर बेटियों को बचाने और शिक्षित करने की योजना पर काम शुरू किया है। प्रदेश सरकार गाँव और शहर के हर व्यक्ति को भविष्य में बेटियों को लेकर आने वाली गंभीर समस्या को जागरूक करने का काम कर रही है। वस्तुतः बेटियों के बिना इस संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए आज बेटियों को बचाना सबसे बड़ी चुनौती है। इस ध्येय को लेकर प्रधानमंत्री मोदी जी ने 22 जनवरी, 2015 से पानीपत की धरती से 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है। उनके मतानुसार नर से बढ़कर नारी है। विडम्बना यह है कि आज समाज में बेटी को गर्भ में ही मौत के घाट उतार दिया जा रहा है जो कि महापाप है। देश के अनेक गाँवों और शहरों मे बेटियों को शिक्षा से भी वंचित रखा जाता है। इससे समाज व देश का विकास संभव नहीं है। आज के दौर में हमें शपथ लेनी होगी कि 'न तो हम यह पाप करेंगे और न ही करने देंगे।' किसी कवि ने ठीक ही लिखा है-

भ्रूण हत्या है कलंक देश पे, मत ना अत्याचार करो।

फरक नहीं लड़का-लड़की में, एक समान व्यवहार करो।।

www.ignited.in

कुरुक्षेत्र में दिनांक 17-1-15 का वह दिन शुभ दिन था, उस दिन यह आह्वान किया गया कि बेटों के साथ बेटियों के जन्म लेने पर भी जश्न के रूप में थालियाँ बजाने की रियायत को कुरुक्षेत्र के द्रोणाचार्य स्टेडियम में राज्यमंत्री कृष्ण कुमार बेदी, थानेसर के विधायक सुभाष सुधा और लाडवा के विधायक डॉ. पवन सैनी की मौजूदगी में शुरू किया गया। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा थालियाँ बजाकर बेटी के जन्म लेने पर खुशी का इजहार करने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कृष्ण कुमार बेदी ने आह्वान किया कि हरियाणा प्रदेश में बेटी के जन्म लेने पर परम्परा के अनुसार थालियां बजाकर खुशी का इजहार करें। जिला प्रशासन खासकर रेडक्रॉस सोसाइटी की तरफ से बेटियों के जन्म लेने पर थाली बजाने की रियायत को बरकरार रखने का आह्वान किया गया।

प्रदेश के महिला एवं विकास मंत्री कृष्ण कुमार ने बताया कि हरियाणा सरकार 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान को एक मिशन की तरह अमली जामा पहनाएगी। उन्होंने बताया कि सरकार भ्रूण हत्या को रोकने और बेटियों को अधिक से अधिक शिक्षित करने को लेकर एक मिशन के रूप में काम कर रही है। सरकार बेटियों को बचाने के लिए जमीनी स्तर पर काम करेगी, सरकार गाँव-गाँव में जाकर लोगों की मानसिकता को बदलने का प्रयास करेगी। उन्होंने बताया कि देश के 100 जिलों में लिंगानुपात की स्थिति 900 से नीचे है। इस सामाजिक असंतुलन को दूर करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार कटिबद्ध है। अगर प्रदेशवासी अब भी सजग नहीं हुए तो अपने बेटों के लिए बहुओं की तलाश करने के लिए भटकना पड़ेगा। आज आवश्यकता है देश के लोगों को अपनी रूढिवादी विचारधारा को बदलने की।

आज देश के रंगमंच पर खड़े होकर देखें तो भ्रूण हत्या वायरस समाज में फैलता जा रहा है। भ्रूण हत्या महा पाप है। देश में महिलानुपात आए दिन गिरता जा रहा है। आज हमें समाज में घर-घर जाकर लोगों को भ्रूणहत्या के प्रति जागरूक करना होगा। लोगों को समझाना होगा कि लड़का और लड़की एक समान समझो। लड़कियाँ लक्ष्मी स्वरूप होती हैं। बेटियों को सम्मान देना, उनका हक दिलाना, उन्हें सुरक्षा, सम्मान, शिक्षा स्वास्थ्य आदि पहलुओं पर गंभीर विचार करने की महती आवश्यकता है।

'बेटी बचाओ' अभियान को उस समय बल मिला जब लोहड़ी पर्व पर इस्माईलाबाद के एक परिवार ने बेटी के जन्म पर पूरे गाँव को भोजन करवाया। जोधपुर गाँव के पूर्व सरपंच बलबीर सिंह के भतीजे के घर कन्या का जन्म लोहड़ी पर्व पर हुआ तो बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। श्री बलबीर सिंह ने कहा कि हमें पुरानी रूढियों को खत्म करना होगा। हमें लड़कियों का पालन-पोषण बेटों की तरह करना होगा। इस्माईलाबाद के निकटवर्ती गाँव कंगवाल में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जागरूकता अभियान के तहत महिलाओं को कन्याओं की रक्षा का प्रण दिलवाया गया। महिलाओं ने पैदल मार्च कर घर-घर भ्रूण हत्या रोकने की अपील की। आँगन बाड़ी कार्यकत्र्री मेवा देवी ने कहा कि यदि बेटियों की संख्या नहीं रोकी गई तो समाज का ताना-बाना बिगडकर रह जाएगा।

वस्तुतरू भ्रूण हत्या एक सामाजिक बुराई ही नहीं, कानूनन अपराध भी है। इसे जड़ से खत्म करना होगा। सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ब्रह्मानन्द के अनुसार 'बेटी अपने जीवन को तीन रूपों में व्यतीत करती है। पहले तो किसी की बेटी बनकर, फिर बहू बनकर और इसके बाद माँ (दादी) बनकर परिवार का पालन-पोषण करती है।' आज बेटियाँ ही हैं जो विश्व में देश व प्रदेश का नाम चमका रही हैं। प्रोफेसर डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा के अनुसार, 'बेटियाँ परिवार में लाज रखने वाली होती हैं। हिन्दू जाति की आर्य कन्या आर्य जाति का गौरव है और उनकी रक्षा करना हमारा परम कत्र्तव्य है।' असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. संतोष दहिया के मतानुसार 'बेटी के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। बेटी नहीं होगी तो इस संसार को जननी कहाँ से मिलेगी। समाज में गलत रूढियों और अशिक्षा के कारण बेटियों को बोझ माना जा रहा है जो कि सर्वथा गलत है। दहेज प्रथा के कारण बेटियों को जन्म से पहले ही गर्भ में मारा जा रहा है जो महापाप है।'

कई संस्थाओं ने इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए संकल्प लिया है। स्काउट्स विंग के कार्यकत्र्ताओं ने स्लोगन लिखी पट्टिकाएँ लेकर अनेक स्थानों पर प्रदर्शन किया है-

1. बेटा बेटी एक समान।
2. कन्याओं को मरवाओगे तो बहू कहां से लाओगे।
3. हम सबने यह ठाना है-बेटी बचाकर उसे पढ़ाना है।
4. कन्या भ्रूण-हत्या जघन्य अपराध है।

उक्त नारे लगाकर स्काउट्स विंग ने ग्रामवासियों को भ्रूण हत्या के विरुद्ध जागरूक किया। हरियाणा के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की तरफ से 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' मुहिम को लेकर तैयार किए गए कलैंडर व प्रचार सामग्री को आम जनता में वितरित किया गया और यह संदेश दिया गया-

'बेटी का प्यार, नारी का सम्मान।

यही है हमारे हरियाणा की पहचान।।'

राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो देश में प्रति हजार पुरुषों पर 943 महिलाएँ हैं जबकि हरियाणा में प्रति हजार पुरुषों की संख्या के मुकाबले कन्याओं की संख्या 879 है। जिस देश में वैज्ञानिक कल्पना चावला, ममता खर्व, आई.ए.एस. टॉपर सेहना अग्रवाल, रानी रामपाल, रितु रानी, पर्वतारोही संतोष यादव व ममता सौदा, गीता, बबीता बलाली, पिंकी जाँगड़ा, सीमा अंतिल, अंजु दुआ, एथलीट कृष्ण पूनिया, अभिनेत्री मेघना और मल्लिका, सुनील डबास, सरीखी बेटियाँ देश-विदेश में अपने नाम का डंका बजा रही हैं। जहाँ बेटियाँ आई.ए.एस. में टॉप करती हों, हॉकी, फुटबाल सरीखे खेलों में राष्ट्रीय टीम में आधिपत्य रखती हों, पारिवारिक सभी सामाजिक अभिवर्जनाओं को तोड़ते हुए बेटों के मुकाबले आगे खड़ी हों, वहाँ इतने बदत्तर लिंगानुपात का होना शर्म की बात है। इस सच्चाई से विमुख नहीं हुआ जा सकता कि यहाँ लिंग आधारित भेदभाव चरम सीमा पर है। बेटे के जन्म पर थाली बजाना, कुआं पूजन से लेकर घुड़चढ़ी व माता-पिता के देहांत पर मुखाग्नि देने को पुरुषों का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाना, इस भेदभाव को निर्मूल करने में सबसे बड़ी बाधा है। कुरुक्षेत्र के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की सिविल विभाग की प्रोफेसर डॉ. सरस्वती सेतिया ने कहा कि 'भारतीय महिलाओं को जागरूक करने के साथ-साथ पुरुषों को भी जागरूक करने की आवश्यकता है। यह देश पितृ सत्तात्मक समाज है। यहाँ पुरुष ही परिवार को नियंत्रित करता है।' हरियाणा के मुख्यमंत्री श्रीयुत् मनोहरलाल खट्टर ने कहा है कि 'घटता लिंगानुपात हमारे लिए चुनौती बनकर खड़ा है।' केन्द्रीय महिला एवं बालविकास मंत्री मेनका गांधी ने कहा है कि 'हमें बेटी को पराया धन समझने की सोच बदलनी होगी।'

हरियाणा के गैर सामाजिक संगठनों ने दादी-पोती अभियान से जोडकर 'दादी मंडल' नाम से मुहिम चलाई है। इसके लिए लड़कियों के जन्म को महत्त्व देने वाली दादियों को विशेष रूप से सम्मानित करने की मुहिम चलाई गई है। यहाँ इस्माईलाबाद के निकटवर्ती गाँव 'लोटनी' का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। इस गाँव में एक हजार बेटों के मुकाबले 909 बेटियाँ हैं। गाँव के सरकारी स्कूल में भी लड़कों से अधिक संख्या में लड़कियाँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इस गांव के मिडिल स्कूल में 60 लड़कों के मुकाबले 72 और प्राइमरी स्कूल में 55 लड़कों के मुकाबले 73 लड़कियाँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इस गाँव के लोगों का कहना है कि उन्होंने लिंग जांच न करवाने का प्रण लिया हुआ है। इस गाँव में बेटी के जन्म पर घर-घर खुशियाँ मनाई जाती हैं। इस गाँव की महिलाएँ ही नहीं, युवकों तक बेटी बचाओ अभियान में जुड़े हुए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने पानीपत में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना के साथ-साथ 'सुकन्या समृद्धि योजना' की शुरुआत की है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने लाडली योजना में बदलाव करते हुए 'हरियाणा कन्या कोष' गठित करने का फैसला लिया है। मुख्यमंत्री ने यह भी घोषणा की है कि लड़कियों के कल्याण के लिए हरियाणा में 'राज्य पोषण मिशन' भी गठित किया जाएगा। केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय जन अभियान के माध्यम से असंतुलित शिशु लिंग अनुपात में गिरावट की समस्या के समाधान के लिए एक योजना की शुरुआत की है। इस योजना के दायरे में देश के 100 जिले आएंगे जिसमें हरियाणा के 12 जिले- महेन्द्रगढ़, झज्जर, रेवाड़ी, सोनीपत, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, रोहतक, यमुनानगर, कैथल, भिवानी तथा पानीपत शामिल हैं। इस योजना के जरिए देश के 100 जिलों में एक साल के भीतर लिंग अनुपात में 10 अंक तक सुधार लाने का लक्ष्य है। इस योजना के तहत पाँच साल तक की बालिकाओं में खून की कमी को दूर करने का प्रावधान है। अपराध अधिनियम 2012 को प्रभावी ढंग से लागू करने तथा अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहित व सम्मानित करने का लक्ष्य भी इस योजना के दायरे में आते हैं। हर जिले में पाँच स्कूलों को पाँच लाख रुपए के पुरस्कार देने की योजना भी इसमें शामिल है। 'सुकन्या समृद्धि योजना' के तहत दस साल से कम उम्र की बेटियों के लिए एक हजार से डेढ़ लाख रुपए तक बैंक में उनके मां-बाप जमा करा सकते हैं।

इस राशि पर अन्य बचत योजनाओं के मुकाबले ज्यादा ब्याज मिलेगा और इसमें आयकर भी नहीं लगेगा। 21 वर्ष से होने के पश्चात् लड़की की शादी या पढ़ाई के समय यह पैसा काम आ सकेगा। 'हरियाणा कन्या कोष' के अन्तर्गत प्रदेश में पहली बेटी के जन्म पर ही आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इस कोष से गरीबों और अनुसूचित जातियों की सभी बेटियों को भी आर्थिक सहायता दी जाएगी। अब पहली बेटी के जन्म पर ही 21,000 रुपए जमा कराए जाएंगे और 18 साल के बाद यह राशि बढ़कर एक लाख रुपए हो जाएगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा की ऐतिहासिक नगरी पानीपत से कोख में मार दी जाने वाली बच्चियों को बचाने की राष्ट्रव्यापी जंग का ऐलान किया। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या के कलंक को मिटाने के लिए रैली में मौजूद खासकर

महिलाओं से सीधा संवाद किया। माताओं को जहाँ बेटियों की जन्म से पहले हत्या के लिए झकझोरा, वहीं पिता और डॉक्टरों को उनका फर्ज भी याद दिलाया। मोदी जी ने भावुक होकर कहा कि वे देश की जनता से बेटियों की जिंदगी की भीख मांगने आए हैं। उन्होंने आशा जगाई कि जनता अपने प्रधानमंत्री को निराश नहीं करेगी। इस अवसर पर अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान की ब्रांड अंबेसडर बनाया गया और इस योजना पर स्मारिका भी लोकार्पित की गई। प्रधानमंत्री ने हरियाणा की धरती से पूरे देश के लिए एक हजार लड़कों के मुकाबले एक हजार लड़कियों के जन्म पर बल दिया। उन्होंने पुरजोर शब्दों में कहा कि बेटी बचाने का संदेश पूरे देश के लिए जरूरी है। हर कोई चाहता है कि बहू पढ़ी-लिखी होनी चाहिए, लेकिन बेटी को पढ़ाने के लिए आज भी पचास बार सोचा जाता है। बेटियों को अगर नहीं पढ़ाएंगे तो बड़ा अन्याय होगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उक्त अभियान के अन्तर्गत राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए 'आई.एम.ए.' (इंडियन मैडिकल एसोसिएशन) की हरियाणा इकाई की पूरी टीम अपनी भूमिका निभाएगी। डॉक्टरों के माध्यम से जनता को जागरूक करने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। लिंग परीक्षण के मामले में अगर कोई डॉक्टर दोषी पाया जाता है तो 'आई.एम.ए.' उसकी सदस्यता रद्द कर देगी। दरअसल लिंगानुपात की सबसे शर्मनाक स्थिति हरियाणा की है। प्रति हजार पुरुषों पर 940 महिलाओं की राष्ट्रीय स्थिति के मुकाबले हरियाणा में उसकी संख्या सिर्फ 879 है। पानीपत सहित 12 जिलों की स्थिति तो और भी शर्मनाक है जहाँ यह महज 800 के आसपास है। राष्ट्रहित में इस समस्या को जड़ से निर्मूल करना ही उचित है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि देश में आई.वी.एफ. तकनीक निःसंतान दम्पत्तियों की झोली भरने में कारगर साबित हो रहा है। लेकिन इस तकनीक ने हरियाणा के लिंगानुपात की सेहत को बिगाड़ कर रख दिया है। हरियाणा के स्वास्थ्य विभाग के डीजी ने सभी सीएमओ को आदेश जारी किए हैं कि वे ऐसे सैंटरों का रिकॉर्ड देखें और हर माह उसकी रिपोर्ट उनके समक्ष भेजे। सीएमओ को यह भी आदेश दिया गया है कि वे ऐसे सैंटरों के रिकॉर्ड में देखें कि कितने लड़के पैदा हुए हैं। आदेश पिछले ही तमाम जिलों के स्वास्थ्य प्रबंधन ने इसको लेकर विशेष टीमों का गठन किया है। इन टीमों की खासकर आइवीएफ व अल्ट्रासाउंड सैंटरों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए आदेश जारी किए गए हैं। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि हरियाणा में 11 'आई.वी.एफ.' सैंटर हैं। ये सैंटर भिवानी, हिसार, करनाल और पानीपत में स्थित हैं। इन सैंटरों पर उक्त तकनीक से बच्चे पैदा होते हैं। सूत्रों के अनुसार इन सैंटरों के संचालकों के द्वारा चोरी छिपे दम्पत्तियों को पुत्र होने की गारंटी दी जाती है तथा फीस के रूप में तीन लाख से अधिक रुपए लिए जाते हैं। राजस्थान में भी यह धंधा चल रहा है। सरकार को चाहिए कि वह इन सैंटरों को रद्द कर दे।

सर्वेक्षण के अनुसार हरियाणा में कन्याओं के लिंगानुपात की स्थिति इस प्रकार है-

राष्ट्रीय	-	943 प्रति हजार
हरियाणा (सम्पूर्ण)	-	879 प्रति हजार
पंचकूला	-	873 प्रति हजार
अम्बाला	-	885 प्रति हजार
यमुनानगर	-	877 प्रति हजार
कुरुक्षेत्र	-	888 प्रति हजार
कैथल	-	881 प्रति हजार
करनाल	-	887 प्रति हजार
पानीपत	-	864 प्रति हजार
सोनीपत	-	856 प्रति हजार
जींद	-	871 प्रति हजार
फतेहाबाद	-	902 प्रति हजार
सिरसा	-	897 प्रति हजार
हिसार	-	872 प्रति हजार
भिवानी	-	886 प्रति हजार
रोहतक	-	867 प्रति हजार
झज्जर	-	862 प्रति हजार
महेन्द्रगढ़	-	895 प्रति हजार

('दैनिक जागरण' से साभार)

सुप्रीम कोर्ट ने गिरते लिंगानुपात और कन्या भ्रूणहत्या पर चिंता जताते हुए राज्यों से कहा है कि अब समय आ गया है, जाग जाओ। पूरी गंभीरता के साथ कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए कदम उठाओ। शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश की ओर से कन्या लिंगानुपात के बाबत पेश हल्फनामें पर असंतोष जताते हुए केन्द्र सरकार से कहा है कि वह उत्तर प्रदेश, हरियाणा व दिल्ली के अधिकारियों के साथ बैठक करें और आंकड़ों की जांच कर कोर्ट को रिपोर्ट दे। कोर्ट उक्त तीनों राज्यों की ओर से पेश लिंगानुपात के आंकड़ों पर असंतोष जताते हुए कहा कि इन राज्यों की सरकारों ने यह नहीं बताया कि ये आंकड़े किस आधार पर तैयार किए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कन्या भ्रूण हत्या पर राज्यों से सुझाव भी मांगे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश दिया है कि "बेटियों के प्रति लोगों में जागरूकता लाएं। लोगों को बताएं कि लड़की व लड़के में कोई अंतर नहीं है।" पिछले दिनों हरियाणा के 'जिला रेडक्रॉस सोसाइटी' की ओर से यह तय किया गया है कि 100 गाँवों के 250 युवकों को भ्रूण रोकने और बेटियों को शिक्षित करने का संकल्प दिलाया गया। हरियाणा की 'आदर्श अतरोल खाप' की पंचायत गाँव बास में खाप प्रधान इन्द्रसिंह की अध्यक्षता में

www.ignited.in

हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि गाँव का कोई व्यक्ति दुष्कर्म, भ्रूण हत्या के जुर्म में पाया गया तो सतरोल खाप उस व्यक्ति का हुक्का-पानी बंद कर सामाजिक बहिष्कार करेंगी। खाप के प्रधान ने यह भी ऐलान किया कि खाप के अन्तर्गत आने वाले सभी 43 गांवों में जो भी व्यक्ति बलात्कार और भ्रूण हत्या करेगा, उस पर खाप कठोर कार्रवाई करते हुए उस व्यक्ति का समाज से हुक्का-पानी बंद कर सामाजिक बहिष्कार करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश में जब तक भ्रूण हत्या का कलंक नहीं मिटेगा तब तक बेटियों की संख्या कम ही रहेगी। सतरोल खाप के प्रधान ने यह कहा है कि प्रत्येक गांव में एक कमेटी का गठन किया जाएगा जो भ्रूण हत्या रोकने का कार्य करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि उसके गाँव में काफी युवा कुँवारे बैठे हुए हैं और उनकी फौज बढ़ती जा रही है।

आज पूरे देश में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा दिया जा रहा है। दरअसल बेटी को बचाना तो जरूरी है लेकिन बेटी को पढ़ाना उससे भी जरूरी है क्योंकि जब एक बेटी पढ़ती है तो दो घरों में उजाला आता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य न कर रही हों। बावजूद इसके समाज में बेटियों को बेटों के जैसा सम्मान नहीं मिल रहा है। गिरता लिंगानुपात भविष्य के लिए खतरे की घंटी है और इस खतरे को भांपते हुए कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराई को समूल नष्ट करना होगा। इस पुण्य कार्य में महिलाओं की भूमिका अहम साबित हो सकती है। महिलाएँ यदि ठान लें तो कोई ताकत नहीं जो उसे कन्या भ्रूण हत्या करने या करवाने के लिए मजबूर कर दें। यदि समाज की हर नारी कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ सख्ती से आवाज बुलंद करे तो कोई दो राय नहीं कि बेटियों की संख्या अवश्य ही बढ़ेगी। बेटियों की संख्या बढने के साथ-साथ उनको पढ़ाना भी निहायत जरूरी होगा। नारी यदि पढ़ी-लिखी होगी तो अपने अधिकारों व कर्तव्यो के प्रति सजग होगी। वस्तुतः जब तक लोगों को मानसिकता में बदलाव नहीं आएगा और जब तक अभियान के साथ नहीं जुड़ेंगे, तब तक भ्रूण हत्या को रोकना संभव नहीं होगा।

संदर्भ:

1. 'कश्प' अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अमृतसर
2. दैनिक जागरण, पानीपत
3. दैनिक ट्रिब्यून, चण्डीगढ़
4. वैचारिकी, भारतीय विद्यामंदिर, कोलकाता
5. सप्तसिंधु, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला
6. साहित्यकार निर्देशिका, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
7. हरिगंधा, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला
8. हरियाणा के प्रमुख हिन्दी-साहित्यकार, आई.बी.ए. पब्लिकेशन्स, अम्बाला कैंट

Corresponding Author

Veerpal*

M.A. (Hindi) NET, Village Bupp, Post office Buppa, Tehsil & District, Sirsa